दैनिक भास्कर

इंदौर 17-09-2020

प्रदेश की संभवतः पहली कंपनी जहां कर्मचारी के दफ्तर आने का समय तय नहीं | अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, यूके, जापान और सिंगापुर में साइबर सिक्युरिटी ऑफिस चल रहे हैं इनके | खुद जमीन पर दरी ओढ़कर सोए लेकिन कर्मचारियों के लिए बना दिए रेस्ट रूम

तीन दोस्तों ने किराए के कमरे से शुरू की कंपनी, अब 40 देशों की कंपनियों के लिए साइबर सिक्युरिटी पर कर रहे काम

आइडिया आत्मनिर्भरता का

देव कुण्डल | इंदौर. नौकरी के पीछे भागने वाले युवाओं के लिए शहर तीन दोस्तों के आत्मनिर्भर बनने की कहानी न सिर्फ प्रेरक है, बल्कि परिवार से लेकर कर्मचारी तक के मान-सम्मान रखने का अनुपम उदाहरण भी। अभिषेक पारिक, अमित अग्रवाल और कुलदीप कुण्डल आईटी की पढ़ाई पूरी करने के बाद नौकरी की तलाश में जुट गए। इसी बीच 2002 में मंदी का दौर आ गया। नौकरियों का संकट और गहरा गया। इस पर तीनों दोस्तों ने 2004 में खुद का काम करने का संकल्प लिया और साइबर इन्फ्रा स्ट्रक्चर (सीआईएसएस) कंपनी बनाई। शुरुआत तिलक नगर में किराए के छोटे से कमरे से की। धीरे-धीरे स्थानीय कॉलेज के छोटे-छोटे प्रोजेक्ट मिलने लगे। तीनों दोस्त रोज 14 से 16 घंटे काम करते और अधिकांश समय दफ्तर में ही बिताते।

सीआईएसएस दफ्तर में काम करते कर्मचारी। दफ्तर में ही बिलियर्ड्स खेलने की भी व्यवस्था है। अभिषेक, अमित और कुलदीप की शुरू की कंपनी में अब 700 लोगों का स्टाफ है।

सीडी प्रोग्राम से पुलिस को मिली आपराधिक मामले सुलझाने में मदद

अभिषेक ने बताया कि उन्होंने 'साइबर आई' सीडी प्रोग्राम बनाकर 700 रुपए में सभी साइबर कैफे को सीडी उपलब्ध कराई। इससे कैफे से होने वाले क्राइम के मामलों में पुलिस को काफी मदद मिली। इसे तत्कालीन एसपी रुस्तम सिंह ने भी प्रमोट किया। धीरे-धीरे अन्य राज्यों ने भी इस प्रोग्राम को अपनाया। इसके बाद इसे अपडेट कर 'पैरेंटिंग कंट्रोल सिस्टम' बनाया। इससे इंटरनेट यूजर बच्चों की हर गलत गतिविधि के अलर्ट मैसेज पालकों के मोबाइल पर आने लगे। इस सिस्टम की उपयोगिता ने कंपनी को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई।

700 कर्मचारियों का स्टाफ, 300 साइबर एक्सपर्ट फ्रीलांसर भी तैयार

कुलदीप ने बताया कि शुरुआत में केवल हम तीन दोस्त थे, आज 700 लोगों का स्टाफ है। 300 साइबर एक्सपर्ट फ्रीलांसर भी कंपनी से जुड़े हैं। विदेश में पहला ऑफिस 2011 में अमेरिका में शुरू किया था। तीन साल बाद ऑस्ट्रेलिया और यूके, जापान और सिंगापुर में दफ्तर शुरू किए। आज 40 देशों की कंपनियों के लिए साइबर सिक्युरिटी पर काम कर रहे हैं। हमने 2004 में एक कमरे से शुरुआत की थी। आज न्यू आईटी पार्क में एक लाख वर्ग फीट में दफ्तर है। इसकी शुरुआत हम तीनों ने अपने पिता को अपनी-अपनी कुर्सी पर बैठाकर की। यह संदेश मिले कि बड़ों के आशीर्वाद से ही सब मिलता है।

संकल्प लिया : जो तकलीफ हमने झेली, दूसरों को नहीं उठाने देंगे

कुलदीप ने बताया कि एक बार अभिषेक ने देर रात काम किया और ऑफिस में बिछी दरी पर सो गया। ठंड लगी तो उसी दरी को ओढ़ लिया। उसी दिन हमने तय किया था कि हम अपने कर्मचारी को हर संभव सुविधा देंगे। सीआईएसएस प्रदेश की संभवतः ऐसी पहली कंपनी है, जहां कर्मचारी के दफ्तर आने का समय फिक्स नहीं है। दफ्तर में काम करते हुए नींद आने पर रेस्ट रूम में सोने की सुविधा है। दफ्तर में ही जिम, बिलियर्ड्स सहित इनडोर गेम की सुविधा भी है। महिला कर्मचारियों के लिए फीडिंग रूम व बच्चों के लिए झूलाघर है। इसके सीसीटीवी कैमरों का एक्सेस महिला कर्मचारी के मोबाइल पर दिया है।